Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8/20

श्री श्री गौरांगविधुर्जयति

8/20

ब्रजभाषा में

विलाप कुसुमाञ्जली

श्री श्री वृन्दावनवास जी कृता

अर्थ सहायक—
गौरनिष्ठ राजा रघुनन्दन प्रसाद जी,
मूंगेर ।

प्रकाशक—
बाबा कृष्णदास,
कुसुम सरोवर, (गोवर्द्धन) मथुरा ।

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

प्रथमावृत्ति २०००]
सम्वत् २००७]

नौछावर
मूल्य ।)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8/20

श्री श्री गौरांगविधुर्जयति

8/20

ब्रजभाषा में

विलापकुसुमाञ्जली

श्री वृन्दावनदास जी कृता

श्री रघुनाथदास गोस्वामी विरचित

मूल विलापकुसुमाञ्जली सहिता

श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द ।
हरे कृष्ण हरे राम राधे-गोविन्द ॥
भज—निताई गौर राधे श्याम ।
जप—हरे कृष्ण हरे राम ॥

अर्थ सहायक—

गौरनिष्ठ राजा रघुनन्दन प्रसाद जी, मुंगेर ।

प्रकाशक:—

बाबा—कृष्णदास

कुसुमसरोवर (गोवर्द्धन) मथुरा ।

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

प्रथमावृत्ति १०००] सं० २००७ वि० [मूल्य ।-)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दो शब्द !

आज हम करुणावरुणालय प्रेमावतार भगवान् गौरांग-देवजू की असीम कृपा से यह व्रजभाषा में श्री वृन्दावनदास जी के द्वारा विरचित भाषा विलापकुसुमाञ्जली नामक ग्रन्थ प्रकाशित कर करुणामयी किशोरी जू की करुणा घटा की सरस छटा से निरन्तर परितृप्त रसिकजनों के हृदय मन्दि में विराजित रसराज रसिक—किशोर श्री श्यामसुन्दर जी के चरणों में अर्पण करिने में समर्थ हुए। वाणीकार श्री वृन्दावन-दास जी ने अपने पूर्वाचार्य्य श्री रघुनाथदास गोस्वामी जी के द्वारा संस्कृत भाषा में विरचित 'विलापकुसुमाञ्जली' नामक अद्भुत ग्रंथ को सामने रख कर तथा उसके श्लोकों को विविध छन्द से भावमय, सरस, सरल जो रचना की है वह भाषा साहित्य में अतुलनीय महान् अनूठी तो है ही परन्तु उपासना जगत् में भी यह सर्वोच्च मानी जा सकती है। श्री राधा-गोविन्द जी के मनोहर दैनिन्दीनिलीला को निरन्तर मानस क्षेत्र में चिन्तन करने वाले रसिक भक्तगणों के लिये यह ग्रंथ परम उपादेय है। इसलिये ही हम व्रजभाषा में विरचित यह विलापकुसुमाञ्जली तथा उसका मूल ग्रंथ संस्कृत भाषा में विरचित विलापकुसुमाञ्जली दोनों को एक ही साथ प्रकाशित कर रसिकगणों के समक्ष उपस्थित करते हैं। आशा है भावुक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8/20

पाठकजन दोनों को मिला कर पाठ करेंगे तथा परम आनन्द का अनुभव करेंगे। इस विलापकुसुमाञ्जली में श्री रघुनाथदास गोस्वामी ने अपने नित्यसिद्धमञ्जरी भाव में आविष्ट चित्त होकर अपनी आराध्यदेवी श्री वृषभानुकिशोरी जू की नित्य सेवा के लिए जो लालसामयी तीव्र उत्कण्ठा पूर्ण प्रार्थना की है यह सबके आस्वादन का विषय है। यदि कोई रागानुगा मार्ग में आकर सखीमञ्जरी भाव से—राग मार्ग के गुरु श्री रूप, सनातनादिक गोस्वामीगण का किम्वा उन सबके रूपमञ्जरी, रसमञ्जरी प्रभृति नित्यसिद्ध प्रेष्ठ स्वरूप का आनुगत्य होकर स्वामिनी जू की सरस सेवा करने की हृदय में इच्छा रखता हो तब वह अवश्य विलाप कुसुमाञ्जली का नित्य पाठ करें एवं हृदय में हार रूप करके रखें। आप श्रीदास-गोस्वामी जी ने स्वामिनी जू के तीव्र विरह में तप्त हृदय होकर अनुराग से परिपूर्ण जो विलाप किया है वह सब धारावाहिक रूप से सञ्चित होकर स्वामिनी जू के चरणों में अर्पणार्थ विलाप कुसुमों की अञ्जली रूप बन गई है। अतः स्वयं आपने ही इस स्तव का नाम विलापकुसुमाञ्जली रखा है। विरह की मूर्ति श्रीदास गोस्वामी जी ने इस स्तव की रचना कर विरही जगत को यह सिखाया है कि स्वामिनी जू की परिपूर्ण प्राप्ति एतादृश विरह से ही होती है। जहाँ विरह नहीं वहाँ इष्ट की प्राप्ति ही अप्राप्ति रूप है जैसा कि बिना भूख प्रचुर उपादेय वस्तु है। समस्त प्राकृत, अप्राकृत, प्राचीन, अर्वाचीन, संस्कृतज्ञ, भाषाविज्ञ-साहित्यकारों का यह एक मत है। मूल विलाप-कुसुमाञ्जली के रचनाकार श्री दास गोस्वामी जी की दिनचर्य्या अत्यन्त कठिन थी। नित्य त्रिसन्ध्या राधाकुण्ड में मग्न स्नान, एक पल मात्र तक्र का सेवन, ५६ दण्ड भजन, ४ दण्ड मात्र

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शयन, प्रभृति असराहनीय कर्म्म था। आप निरन्तर प्रिया प्रियतम की मानसिक सेवा का चिन्तन करते थे। आप छै: गोस्वामियों में एक मुख्यतम तथा वैराग्य के मूर्त्तिमानस्वरूप थे। स्वरूपगोस्वामीजी के द्वारा पाले हुए, महाप्रभु के हस्त पञ्जर में स्थित, वैराग्य विद्या का अभ्यस्त करने वाले शुक रूप वे इस इह जगत में वैराग्य विद्या की जो अन्त्यकाष्ठा दिखा गए हैं इससे जगत उनका सर्वदा ऋणी रहेगा। भाषा विलाप-कुसुमाञ्जली के रचना कार श्री वृन्दावनदास जी के सम्बन्ध में हमें कुछ विशेष ज्ञात नहीं हैं। सम्प्रति खोज में उनके द्वारा रचित "भक्तनामावली, प्रेमभक्तिचन्द्रिका, तथा यह विलापकुसुमाञ्जली प्राप्त हुए जिन्हें प्रकाशित करके हम प्रेमीजनों के समक्ष उपस्थित कर रहे हैं।

कुसुमसरोवर
(गोवर्द्धन)

वैष्णव दासानुदास
कृष्णदास

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8/20

॥ श्रीविलापकुसुमाञ्जलिः ॥

श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः ॥

त्वं रूपमञ्जरि सखि प्रथिता पुरेऽस्मिन्
पुंसः परस्य वदनं नहि पश्यसीति ।
विम्बाधरे न्यतमनागत—भर्तृकाया
यत्ते व्यधायि किमु तच्छुकपुंगवेन ॥ १ ॥

स्थलकमलिनि युक्तं गर्व्विता काननेऽस्मिन्
प्रथयसि वरहास्यं पुष्पगुच्छच्छलेन ।
अपि निखिल लतास्ताः सौरभाक्ताः स मुञ्चन्
मृगयति तव मार्गं कृष्णभृंगो यदद्य ॥ २ ॥

व्रजेन्द्रवसतिस्थले विविधवल्लवीसंकुले
त्वमेव रतिमञ्जरि प्रचुरपुण्यपुञ्जोदया ।
विलासभरविस्मृतप्रणयिमेखलामार्गणो
यदद्य निजनाथया व्रजसि नाथिता कन्दरं ॥ ३ ॥

प्रभुरपि यदुनन्दनो य एष प्रियतदुनन्दन उन्नतप्रभावः
स्वयमतुलकृपामृताभिषेकं मम कृतवांस्तमहं प्रपद्ये ॥ ४

यो मां दुस्तरगेहनिर्जलमहाकूपादपारक्लमात्
सद्यः सान्द्रदयाम्बुधिः प्रकृपितः स्वैरी कृपारज्जुभिः ।
उद्धृत्यात्मसरोजनिन्दिचरणप्रान्तं प्रपाद्य स्वयं
श्री दामोदरसाच्चकार तमहं चैतन्यचन्द्रं भजे ॥ ५ ॥

वैराग्ययुक् भक्तिरसं प्रयत्नैरपाययन्मामनभीप्सुमन्धं ।
कृपाम्बुधिर्यः परदुःखदुःखी सनातनं तं प्रभुमाश्रयामि ॥६

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अत्युत्कटेन नितरां विरहानलेन
दन्दह्यमानहृदया किल कापि दासी ।
हा स्वामिनि क्षणमिह प्रणयेन गाढ़
माक्रन्दनेन विधुरा विलपामि पद्यैः ॥ ७ ॥

देवि दुःखकुलसागरोदरे दूयमानमतिदुर्गतं जनं ।
त्वं कृपाप्रबलनौकयाद्भुतं प्रापय स्वपदपंकजालयम् ॥८

त्वदलोकनकालाहिदंशैरेव मृतं जनं ।
त्वत् पादाब्जमिलल्लाक्षाभेषजै र्देवि जीवय ॥ ९ ॥

देवि ते चरणपद्मदासिकां विप्रयोगभरदावपावकैः ।
दह्यमानतरा कायवल्लरीं जीवय क्षणंनिरीक्षणामृतैः॥१०

स्वप्नेऽपि किं सुमुखि ते चरणाम्बुजात
राजत्परागपटवासविभूषणेन ।
शोभां परामतितरामहमोत्तमांगं
विभ्रद्भविष्यति कदा मम सार्थनाम ॥ ११ ॥

अमृताब्धिरसप्रायैस्तव नूपुरसिञ्जितैः ।
हा कदा मम कल्याणि वाधिर्य्यमपनेष्यते ॥ १२ ॥

शशकभृदभिसारे नेत्रभृंगाञ्चलाभ्यां
दिशि विदिशि भयेनोद्घूर्णिताभ्यां बनानि ।
कुवलयदलकोषाण्येव क्लृप्तानि याभ्यां
किमु किल कलनीयो देवि ताभ्यां जनोऽयम् ॥ १३ ॥

यदवधि मम काचिन्मञ्जरी रूपपूर्वा
व्रजभुवि वत नेत्रद्वन्द्वदीप्तिं चकार ।
तदवधि तव वृन्दारण्यराज्ञि ! प्रकामं
चरणकमललाक्षासंदिदृक्षा ममामूत् ॥ १४ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यदा तव सरोवरं सरसभृंगसंघोल्लसत्
सरोरुहकुलोज्वलं मधुर वारि सम्पूरितं ।
स्फुटत्सरसिजाञ्चि हे नयनयुग्म साक्षाद्वभौ
तवैव मम लालसाजनि तवैव दास्येरसे ॥ १५ ॥

पादाब्जयोस्तव विना वरदास्यमेव
नान्यत्कदापि समये किल देवि याचे ।
सख्याय ते मम नमोऽस्तु नमोऽस्तु नित्यं
दास्याय ते मम रसोऽस्तु रसोऽस्तु सत्यं ॥ १६ ॥

अतिसुललित लाक्षश्लिष्टसौभाग्यमुद्रा
ततिभिरधिकतुष्ट्या चिन्हती कृत्य वाहू ।
नखदलित हरिद्रागर्व्वगौरि प्रियां मे
चरणकमलसेवां हा कदा दास्यसि त्वम् ॥ १७ ॥

प्रणालीं कीलालै र्बहुभिरसंक्षाल्य मधुरै
र्मुदा संमार्ज्य स्वैर्धिवृतकचवृन्दै: प्रियतया ।
कदा वाह्यागारं वरपरिमलै र्धूपनिवहै
र्विधास्ये ते देवि प्रतिदिनमहो वासितमहम् ॥१८॥

प्रातः सुधांशुमिलितां मृदमत्र यत्ना
दाहृत्य वासितपयश्च गृहान्तरे च ।
पादाम्बुजे तव कदा जलधारया ते
प्रक्षाल्य भाविनि कचैरिह मार्जयामि ॥ १९ ॥

प्रक्षाल्य पादकमलं कृतदन्तकाष्ठां
स्नानार्थमन्यसदने भवतीं निविष्टां ।
अभ्यज्य गन्धिततरैरिह तैलपूरै:
प्रोद्वर्त्तयिष्यति कदा किमु किंकरीयम् ॥ २० ॥

अयि विमलजलानां गन्धकर्पूरपुष्पै
र्जितविधुमुखपद्मे वासितानां घटोघै: ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रणय ललित सख्या दीयमानैः पुरस्ता
त्तव वरमभिषेकं हा कदाहं करिष्ये ॥ २१ ॥

पानीयं चीनवस्त्रैः शशिमुखि शनकै रम्यमृद्वंगयष्टे
र्यत्नादुत्साय्य मोहाद्दिशि दिशि विचलन्नेत्रमीनाञ्चलाया२
श्रोणौ रक्तं दुकूलं तदपरमतुलं चारु नीलं शिरोग्रात्
सर्व्वांगेषु प्रमोदात् पुलकितवपुषा किं मया ते प्रयोज्यम्॥२:

प्रक्षाल्य पादकमलं तदनुक्रमेण
गोष्ठेन्द्रसूनुदयिते तव केशपाशम्।
हा नर्म्मदाग्रथितसुन्दरसूक्ष्ममाल्यै
र्वेणीं करिष्यति कदा प्रणयैर्जनोऽयम् ॥ २३ ॥

सुभगमृगमदेनाखण्डशुभ्रांशुवक्त्रे
तिलकमिह ललाटे देवि मोदाद्विधाय।
मसृणघुसृणचर्च्चामर्पयित्वा च गात्रे
स्तनयुगमपि गन्धैश्चित्रितं किं करिष्ये ॥२४॥

सिन्दूररेखा सीमन्ते देवि रत्नशलाकया।
मया या कल्पिता किन्ते सालाकाञ्छोभयिष्यति॥२५॥

हन्तदेवि तिलकस्य समन्ता द्विन्दवोऽरुणसुगन्धिरसेन।
कृष्णमादकमहौषधिमुख्या धीरहस्तमिह किं परिकल्प्याः॥२६॥

गोष्ठेन्द्रपुत्रमदचित्तकरीन्द्रराज
बन्धाय पुष्पधनुषः किल बन्धरज्जोः।
किं कर्णयो स्तव वरोरु। वरावतंस
युग्मेन भूषणमहं सुखिता करिष्ये ॥२७॥

या ते कञ्चुलिरत्र सुन्दरि मया वक्षोजयोरर्पिता
श्यामाच्छादनकाम्यया किल न सा ऽसत्येति विज्ञायताम्

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किन्तु स्वामिनि कृष्ण एव सहसा तत्तामवाप्य स्वयं
प्राणेभ्योऽप्यधिकं स्वकं निधियुगं संगोपयत्येव हि ॥२८॥

नानामणिप्रकरगुम्फितचारुपुष्ट्या
मुक्तास्रजस्तव सुवक्षसि हेमगौरि ।
श्रान्त्याभृतालसमुकुन्दसुतूलिकायां
किं कल्पयिष्यतितरां तव दासिकेयम् ॥२९॥

मणिचयखचिताभिर्नीलचूड़ावलीभि
र्हरिदयितकलाविद्वन्द्वमिन्दीवराक्षि ।
अपि वत तव दीव्यैरगुंलीरंगुलीयैः
क्वचिदपि किल काले भूषयिष्यामि किंनु ॥३०॥

पादाम्भोजे मणिमयतुलाकोटियुग्मेम यत्ना
दभ्यर्च्चे तद्दलकुलमपि प्रेष्ठपादांगुलीयैः ।
काञ्चीदाम्ना कटितटमिदं प्रेमपीठं सुनेत्रे
कंसारातेरतुलमचिरादर्च्चयिष्यामि किं ते ॥३१॥

ललिततरमृणालीकल्पवाहुद्वयं ते
मुरजयिमतिहंसीधैर्य्यविध्वंसदक्षम्
मणिकुलरचिताभ्यामंगदाभ्यां पुरस्तात्
प्रमदभरविनम्रा कल्पयिष्यामि किं वा॥३२॥

रासोत्सवे य इह गोकुलचन्द्रवाहु
स्पर्शेन सौभगभरं नितरामवाप ।
ग्रैवेयकेण किमु तं तव कंठदेशं
संपूजयिष्यति पुनः सुभगे जनोऽयम्॥३३॥

दत्तः प्रलम्वरिपुणोद्भटशंखचूड़
नाशात् प्रतोषि हृदयं मधुमंगलस्य ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हस्तेन यः सुमुखि कौस्तुभमित्रमेतं
किं ते स्यमन्तकमणिं तरलं करिष्ये ॥३४॥

प्रान्तद्वये परिविराजित गुच्छयुग्म
विभ्राजितेन नवकाञ्चनडोरकेण ।
क्षीणं त्रुटत्यथ कृशोदरि चेदितीव
वध्नामि भोस्तव कदातिभयेन मध्यम् ॥३५॥

कनकगुणितमुच्चै मौक्तिकं मस्कराक्ते
तिलकुसुमविजेत्री नासिका सा सुवृत्तं ।
मधुमथनमहालिक्षोभकं हेमगौरि
प्रकटतरमरन्द प्रायमादास्यते किम् ॥३६॥

अंगदेन तव वामदोः स्थले स्वर्णगौरि नवरत्नमालिकाम् !
पद्मगुच्छपरिशोभितामिमामाज्ञया परिणयामि ते कदा ॥३७॥

कर्णयोरुपरि चक्रशलाके चञ्चलाक्षि निहिते मयका ते ।
क्षोभकं निखिलगोपवधूनां चक्रवद्भ्रमयतां मुरशत्रुम् ॥३८॥

कदा ते मृगशावाक्षि चिबुके मृगनाभिना ।
विन्दुमुल्लासयिष्यामि मुकुन्दामोदमन्दिरे ॥३९॥

दशनांस्ते कदा रक्तरेखाभि र्भूषयाम्यहं ।
देवि मुक्ताफलानीह पद्मरागगुणैखि ॥४०॥

उत्खादिरेण नवचन्द्रविराजितेन
रागेण ते वर सुधाधरविम्बयुग्मे ।
गांगेयगात्रि मयका परिरञ्जितेऽस्मिन्
दंशं विधास्यति हठात् किमु कृष्णकीरः ॥४१॥

यत्प्रान्तदेश लवलेश विघूर्णितेन
वद्धः क्षणाद्भवति कृष्णकरीन्द्र उच्चैः ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तत्खञ्जरीटजयिनेत्रयुग्मं कदायं
संपूजयिष्यति जनस्तव कज्ज्वलेन ॥४२॥

यस्यांकरञ्जितशिरास्तव मानभंगे
गोष्ठेन्द्रसूनुरधिकां सुषमामुपैति ।
लाक्षारसः स च कदा पदयोरधस्ते
न्यस्तो मयाप्यतितरां छविमाप्स्यतीह ॥ ४३ ॥

कलावति नतांसयोः प्रचुरकामपुञ्जोज्वलत्
कलानिधिमुरद्विषः प्रकटराससम्भावयोः ।
भ्रमद्भ्रमरझंकृतैर्मधुरमल्लिमालां मुदा
कदा तव तयोः समर्पयति देवि दासीजनः ॥ ४४ ॥

सूर्य्याय सूर्य्यमणिनिर्म्मितवेदिमध्ये
मुग्धांगि भावत इहालिकुलैर्वृतायाः ।
अर्घं समर्पयितुमुत्कधियस्तवोरात्
सज्जानि किं सुमुखि दास्यति दासिकेयम् ॥ ४५ ॥

व्रजपुरपतिराज्ञया आज्ञया मिष्टमन्नं
बहुविधमतियत्नात् स्वेन पक्वं वरोरु ।
सपदि निजसखीनां मद्विधानाञ्च हस्तैः
मधुमथननिमित्तं किं त्वया सन्निधाप्यम् ॥ ४६ ॥

नीतान्नमद्विधललाटतटे ललाटं
प्रीत्या प्रदाय मुदिता व्रजराजराज्ञी ।
प्रेम्ना प्रसूरिव भवत्कुशलस्य पृच्छां
भव्ये विधास्यति कदा मयि तावकत्वात् ॥ ४७ ॥

कृष्णवक्त्राम्बुजोच्छिष्टं प्रसादं परमादरात् ।
दत्तं धनिष्ठया देवि ? किमानेष्यामि तेऽग्रतः ॥ ४८

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नानाविधैरमृतसाररसायनैस्तैः
कृष्णप्रसादमिलितैरिह भोज्यपेयैः ।
हा कुंकुमांगि ? ललितादिसखीवृता त्वं
यत्नान्मया किमुतरामुपभोजनीया ॥ ४९ ॥

पानाय वारि मधुरं नवपाटलादि
कर्पूरवासिततरं तरलाक्षि दत्वा ।
काले कदा तव मयाचयनीयदन्त
काष्ठादिकं प्रणयतः परमर्पणीयम् ॥ ५० ॥

भोजनस्य समये तव यत्ना
द्देविधूपनिवहान् वरगन्धान् ।
वीजनाद्यमपि तत्क्षणयोग्यं
हा कदा प्रणयतः प्रणयामि ॥ ५१ ॥

कर्पूरपूरपरिपूरितनागवल्ली
पर्णादिपूगपरिकल्पितवीटिकां ते ।
वक्त्राम्बुजे मधुरगात्रि मुदा कदाहं
प्रोत्फुल्लरोमनिकरैः परमर्पयामि ॥ ५२ ॥

आरात्रिकेण भवतीं किमु देवि देवीं
निर्मञ्छयिष्यतितरां ललिता प्रमोदात् ।
अन्यालयश्च नवमंगलगानपुष्पैः
प्राणाव्वुदैरपि कचैरपि दासिकेयम् ॥ ५३ ॥

आलीकुलेन ललिताप्रमुखेन सार्द्धं
मातन्वती त्वमिह निर्भरनर्म्मगोष्ठीं ।
मत्पाणिकल्पितमनोहरकेलितल्प
माभूषयिष्यसि कदा स्वपनेन देवि ॥ ५४ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्वाहयिष्यति पदौ तव किंकरीयं
हा रूपमञ्जरिरसौ च कराम्बुजे द्वे ।
यस्मिन्मनोज्ञ हृदये सदयेऽनयोः किं
श्रीमान् भविष्यतितरां शुभवासरः सः ॥ ५५
तवोद्गीर्णं भोज्यं सुमुखि किल कल्लोलसलिलं
तथा पादाम्भोजामृतमिह मया भक्तिलतया ।
अयि प्रेम्ना सार्द्धं प्रणयिजनवर्गैर्वहुविधै
रहो लब्धव्यं किं प्रचुरतरभाग्योदयवलैः ॥ ५६

भोजनावसरे देवि, स्नेहेन स्वमुखाम्बुजात् ।
मह्यं त्वद्गतचित्तायै किं सुधास्त्वं प्रदास्यसि ॥ ५७ ॥
अपि वत रसवत्याः सिद्धये माधवस्य
व्रजपतिपुरमुद्यद्रोमरोमा व्रजन्ती ।
स्खलितगतिरुदञ्चत्स्वान्तसौख्येन किं मे
क्वचिदपि नयनाभ्यां लप्स्यसे स्वामिनि त्वम् ॥५८॥
पार्श्वद्वये ललितयाथ विशाखया च
त्वां सर्व्वतः परिजनैश्च परैः परीतां ।
पश्चान्मया विभृतभंगुरमध्यभागां
किं रूपमञ्जरिरियं पथि नेष्यतीह ॥ ५९ ॥

हम्बारवैरिह गवामपि वल्लवानां
कोलाहलै र्विविध वन्दि कलावतां तैः ।
संभ्राजते प्रियतया व्रजराजसूनो
र्गोवर्द्धनादपि गुरु र्व्रजवन्दिताद्यः ॥ ६० ॥
प्राप्तां निजप्रणयिनी प्रकरैः परीतां
नन्दीश्वरं व्रजमहेन्द्रमहालयं तं ।
दूरे निरीक्ष्य मुदिता त्वरितं धनिष्ठा
त्वामानयिष्यति कदा प्रणयैर्ममाग्रे ॥ ६१ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रक्षाल्य पादकमले कुशले प्रविष्टा
नत्वा व्रजेशमहिषीप्रभृतीर्गुरुस्ताः ।
हा कुर्व्वती रसवतीं रसभाक् कदा त्वं
संमज्जयिष्यसितरां सुखसागरे माम् ॥ ६२ ॥

माधवाय नतवक्त्रमाहृता भोज्यपेयरससञ्चयं क्रमात् ।
तन्वती त्वमिह रोहिणीकरे देवि फुल्लवदनं कदेक्ष्यसे॥६३॥

भोजने गुरुसभासु कथञ्चिन्माधवेन नतदृष्टिमुदोत्कम् ।
वीक्ष्यमाणमिह ते मुखपद्मं मोदयिष्यसि कदा मधुरे माम्॥६४

अयि विपिनमटन्तं सौरभेयीकुलानां
व्रजनृपतिकुमारं रक्षणे दीक्षितं तं ।
विकलमति जनन्या लाल्यमानं कदा त्वं
स्मितमधुरकपोलं वीक्ष्यसे वीक्ष्यमाणा ॥ ६५ ॥

गोष्ठेशयाथ कुतुकाच्छपथादिपूर्व्वं
सुस्निग्धया सुमुखि मातृपरार्द्धतोऽपि ।
हा हूमिति प्रियगणैः सह भोज्यमानां
किं त्वां निरीक्ष्य हृदये मुदमद्य लप्स्ये ॥ ६६ ॥

आलिंगनेन शिरसः परिचुम्बनेन
स्नेहावलोकनभरेण च खञ्जनाक्षि ।
गोष्ठेशया नववधूमिव लाल्यमानां
त्वां प्रेक्ष्य किं हृदि महोत्सवमातनिष्ये ॥ ६७ ॥

हा रूपमञ्जरि सखि प्रणयेन देवीं
त्वद्बाहुदत्तभुजवल्लरिमायताक्षीं ।
पश्चादहं कलित कामतरंगरंगां
नेष्यामि किं हरिविभूषितकेलिकुञ्जम् ॥ ६८ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust..Funding by MoE-IKS

साकं त्वया सखि निकुञ्जगृहे सरस्याः
स्वस्यास्तटे कुसुमभावितभूषणेन ।
शृंगारितं विदधती प्रियमीश्वरी सा
हा हा भविष्यति मदीक्षणगोचरः किम् ॥ ६६ ॥

श्रुत्वा विचक्षणमुखाद्व्रजराजसूनोः
शस्ताभिसारसमयं सुभगेऽत्र हृष्टा ।
सूक्ष्माम्बरैः कुसुमसंस्कृतकर्णपूर
हारादिभिश्च भवतीं किमलंकरिष्ये ॥ ७० ॥

नानापुष्पैः कृतमधुपैर्देवि ! संभावितामि
मालाभिस्तद्द्युसृणविलसत्कामचित्रालिभिश्च ।
राजद्द्वारे सपदि मदनानन्ददाभिख्य गेहे
मल्लीजालैः शशिमुखि कदा तल्पमाकल्पयामि ॥ ७१ ॥

श्रीरूपमञ्जरिकरार्च्चितपादपद्म
गोष्ठेन्द्रनन्दनभुजार्पितमस्तकायाः ।
हा मोदतः कनकगौरि पदारविन्द
सम्वाहयानि शनकैस्तव किं करिष्ये ॥ ७२ ॥

गोवर्द्धनाद्रिनिकटे मुकुटेन नर्म्म
लीला विदग्ध सिरसां मधुसूदनेन ।
दानच्छलेन भवतीमवरुध्यमानां
द्रक्ष्यामि किं भ्रुकुटिदर्पितनेत्रयुग्माम् ॥ ७३ ॥

तव तनुवरगन्धासंगि-वातेन चन्द्रा-
वलिकरकृतमल्लीकेलितल्पाच्छलेन ।
मधुरमुखि मुकुन्दं कुण्डतीरे मिलन्तं
मधुपमिव कदाहं वीक्ष्य दर्पं करिष्ये ॥ ७४ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समन्तादुन्मत्तभ्रमरकुलझंकारनिकरै
र्लसत् पद्मस्तोमैरपि विहगरावैरपि परं ।
सखीवृन्दैः स्वीयैः सरसि मधुरे प्राणपतिना
कदा द्रक्ष्यामस्ते शशिमुखि नवं केलिनिवहम् ॥ ७५ ॥

सरोवरलसत्तटे मधुपगुञ्जिकुंजान्तरे
स्फुटत्कुसुमसंकुले विविधपुष्पसंघैर्मुदा ।
अरिष्टजयिना कदा तव वरोरु भूषाविधि
र्विधास्यत इह प्रियं मम सुखाब्धिमातन्वता ॥ ७६ ॥

स्फीतस्वान्तं कयाचित् सरभसमचिरेणार्प्यमाणैर्दरोद्य
न्नाना पुष्पोरुगुञ्जाफलनिकरलसत्केकिपिच्छप्रपञ्चैः ।
सोत्कम्पं रच्यमानः कृतरुचिहरिणोत्फुल्लमंगं वहन्त्याः
स्वामिन्याः केशपाशः किमु ममनयनानन्दमुच्चै
र्विधाता ॥ ७७ ॥

माधवं मदनकेलिविभ्रमे मत्तया सरसिजेन भवता ।
ताडितं सुमुखि वीक्ष्य किन्त्वियं गूढ़हास्यवदना
भविष्यति ॥ ७८ ॥

सुललितनिजवाह्वाश्लिष्ट—गोष्ठेन्द्रसूनोः
सुवलिततरवाह्वश्लेषदीव्यन्नतांसा ।
मधुरमदनगानं कुर्वती तेन सार्द्धं
सुभगमुखि मुदं मे हा कदा दास्यसि त्वम् ॥ ७९ ॥

जिव्वा पाशकखेलायामाच्छिद्य मुरलीं हरेः ।
क्षिप्तां मयि त्वया देवि गोपयिष्यामि तां कदा ॥८०॥

अपि सुमुखि कदाहं नालतीकेलितल्पे
मधुर-मधुर-गोष्ठीं बिभ्रतीं वल्लभेन ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मनसिजसुखदेऽस्मिन्मन्दिरे स्मेरगण्डां
सपुलकतनुरेषा त्वां कदा वीजयामि ॥ ८१ ॥

आयातोद्यत्कमलवदने हन्त लीलाभिसाराद्
गत्याटोपैः श्रमविलुलितं देवि पादाब्जयुग्मं ।
स्नेहात् सम्वाहयितुमपि ह्रीपुञ्जमूर्त्तेऽप्पलज्जं
नामग्राहं निजजनमिमं हा कदा नोत्स्यसि त्वम् ॥८२॥

हा नप्त्रि राधे तव सूर्य्यभक्तेः
कालः समुत्पन्न इतः कुतोऽसि ।
इतीव रोषान्मुखरा लपन्ती
सुधेव किं मां सुखयिष्यतीह ॥ ८३ ॥

देवि ? भाषितपीयूषं स्मितकर्पूरवासितं ।
श्रोत्राभ्यां नयनाभ्यां ते किं नु सेविष्यते मया ॥ ८४

कुसुमचयनखेलां कुर्व्वती त्वं परीता
रसकुटिलसखीभिः प्राणनाथेन सार्द्धं ।
कपटकलहकेल्या क्वापि रोषेण भिन्ना
मम मुदमतिवेलं धास्यसे सुव्रते किम् ॥ ८५ ॥

नानाविधैः पृथुलकाकुभरैरसह्यैः
संप्रार्थितः प्रियतया वत माधवेन ।
त्वन्मानभंगविधये सदये जनोऽयं
व्यग्रः पतिष्यति कदा ललितापदान्ते ॥ ८६ ॥

प्रीत्या मंगलगीतनृत्यविलसद्वीणादिवाद्योत्सवैः
शुद्धानां पयसां घटं बहुविधैः संवासितानां भृशम् ।
वृन्दारण्यमहा-धिपत्यविधये यः पौर्णमास्या स्वयं
धीरैः संविहितः स किं तव महास्नेको मया द्रक्ष्यते ॥८७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भ्रात्रा गोयुतमत्र मञ्जुवदने स्नेहेन दत्वालयं
श्रीदाम्ना कृपणां प्रतोष्य जटिलां रत्नाख्यराकाक्षणे ।
नीतायाः सुखशोकरोदनभरैस्ते संद्रवन्त्याः परं
वात्सल्याञ्जनकौ विधास्यत इतः किं लालनां
मेऽग्रतः ॥ ८८ ॥

लज्जयापि पुरतः परतो मां गव्हरं गिरिपतेर्वत नीत्वा ।
दिव्यगानमपि तत्स्वरभेदं शिक्ष्ययिष्यसि कदा
सदये त्वम् ॥ ८९ ॥

याचिता ललितया किल देव्या
लज्जया नतमुखीं गणतो माम् ।
देवि दिव्यरसकाव्यकदम्बं
पाठयिस्यसि कदा प्रणयेन ॥ ९० ॥

निज कुंजतटिकुञ्जे गुञ्जद्भ्रमरसंकुले ।
देवि त्वं कच्छपीशिक्षां कदा मां कारयिष्यसि ॥ ९१ ॥

विहारैस्त्रुटितं हारं गुम्फितुं दयितं कदा ।
सखीनां लज्जया देवि ! संज्ञया मां निदेक्ष्यसि ॥ ९२ ॥

स्वमुखान्मन्मुखे देवि कदा ताम्बूलचर्व्वितं ।
स्नेहात्सर्वदिशो वीक्ष्य समये त्वं प्रदास्यसि ॥ ९३ ॥

निविडमदनयुद्धे प्राणनाथेन सार्द्धं
दयितमधुरकाञ्ची या मदाद्विस्मृतासीत् ।
शशिमुखि समये तां हन्त संभाल्य भंग्या
त्वरितमिह तदर्थं किं त्वयाहं प्रहेया ॥ ९४ ॥

केनापि दोपलवमात्रलवेन देवि
संताड्यमान इह धीरमते त्वयोच्चैः ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रोषेण तल्ललितया किल नीयमानः
संद्रक्ष्यते किमु मनाक् सदरं जनोऽयम् ॥ ९५ ॥

तवैवास्मि तवैवास्मि न जीवामि त्वया विना ।
इति विज्ञाय देवि त्वं नय मां चरणान्तिकम् ॥ ९६ ॥

स्वकुण्डं तव लोलाक्षि सप्रियायाः सदास्पदं ।
अत्रैव मम संवास इहैव मम संस्थितिः ॥ ९७ ॥

हे श्रीसरोवर सदा त्वयि सा मदीशा
प्रेष्ठेन सार्द्धमिह खेलति कामरंगैः ।
त्वञ्चेत प्रियात् प्रियमतीव तयोरितीमां
हा दर्शयाद्य कृपया मम जीवितं ताम् ॥९८ ॥

क्षणमपि तव संगं नत्यजेदेव देवी
त्वमसि समवयस्त्वान्नर्म्मभूमिर्यदस्याः ।
इति सुमुखि विशाखे दर्शयित्वा मदीशां ।
मम विरहहतायाः प्राणरक्षां कुरुष्व ॥ ९९)

हा नाथ गोकुलसुधाकर सुप्रसन्न
वक्त्रारविन्द मधुरस्मित हे कृपार्द्र ।
यत्र त्वया विहरते प्रणयैः प्रियाऽऽरा
त्तत्रैव मामपि नय प्रियसेवनाय ॥ १०० ॥

लक्ष्मीर्यद्यंघ्रिकमलस्य नखाञ्चलस्य
सौन्दर्य्यविन्दुमपि नार्हति लब्धुमीशे ।
सा त्वं विधास्यसि न चेन्मम नेत्रदानं
किं जीवितेन मम दुःखदवाग्निदेन ॥ १०१ ॥

आशाभरैरमृतसिन्धुमयैः कथञ्चित्
कालो मयातिगमितः किल साम्प्रतं हि ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

त्वञ्चेत् कृपां मयि विधास्यसि नैव किं मे
प्राणैर्व्रजेन च वरोरु वकारिणापि ॥ १०२ ॥

त्वञ्चेत्कृपामयी कृपां मयि दुःखितायां
नैवातनोरतितरां किमिह प्रलापैः ।
त्वत्कुण्डमध्यमपि तद्वहुकालमेव
संसेव्यमानमपि किंनु करिष्यतीह ॥ १०३ ॥

अयि प्रणयशालिनि ! प्रणयपुष्टदास्याप्तये
प्रकाममतिरोदनैः प्रचुरदुःखदंग्धात्मना ।
विलापकुसुमाञ्जलिं हृदि निधाय पादाम्बुजे
मया वत समर्पितस्तवतनोतुतुष्टिं मनाक् ॥ १०४ ॥

॥ इति श्रीरघुनाथदास गोस्वामि विरचित
विलापकुसुमाञ्जलिस्तवः समाप्तः ॥

———

लोक-साहित्य प्रेस, घीया मंडी, मथुरा ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विलापकुसुमांजली

दो०—रूप मञ्जरी सखी तुम परम सती विख्यात।
वसि यहि पुर परपुरुष मुख तुमहिं न कबहुँ सुहात ॥
पति अनतिथि में कत अहो! बिम्ब अधर छत जात।
शुक शावक निज चंचुसों कियो कहूँ आघात ॥१॥

रो०—हे थल कमलिनि तुम सहज गर्विता यहि वन भ्राजौ।
पुष्प गुच्छ मिस हास्य मनोहर प्रफुलित साजौ ॥
विविध लता सौरभ तजि प्यारो कृष्ण भ्रमरहू।
डोलत है जिह हेतु खोजतौ तव पथ इतहू ॥२॥

चौ०—नन्दराज व्रजराज राज में। वसी विविध गोपी समाज में।
तुम ही हौ रति मंजरि आली। प्रचुर पुण्य पुंजनि की शाली ॥
अति प्यारी जो कनक किंकिणी। रति-विलास-भर गिरी संगिनी ॥
खोजन जाहु जु गिरि कन्दरा। आयसु स्वामिनि पाय आतुरा ॥३॥
प्रिय यदुनन्दन जो प्रभु मोरे। श्री यदुनँदन प्रभाव अथोरे ॥
अतुल कृपामृत सों जिन सींचौ। गुरुवर पाहि शरण मैं नीचौ ॥
दुस्तर गृह वड़ अंधकूप सों। पार-रहित क्लेशन समूह सौं ॥
जिनि काढ़्यौ करि कृपा लेजु सों। विनु प्रयास अविलम्ब हेजु सों ॥४॥
परम सुतन्त्र जु सहज सुभाएं। परम दयासागर अति भाएं ॥
कमल विनिन्दित चरण प्रान्त में। लियौ राखि जिन मुहि इकान्त में ॥
सो०—सोंप्यौ मम हितु जानि श्री स्वरूप दामोदरहिं।
अमित रूपगुण खानि जै जै सो चैतन्य प्रभु ॥५॥

चौ०—बड़े जतन रस भक्ति विरागा। भरि प्यायौ मो अंध अभागा ॥
पर-दुख-दुखी जु कृपा-निकेतन। आश्रय करहुँ सु प्रभू सनातन ॥६॥
उत्कट विरह सदा अति भारी। दहति हिये कोउ दासि तिहारी ॥
स्वामिनि इहँ क्षण प्रणय गाढ़ सों। क्रन्दहुँ पद आकुल विलाप सों ॥७॥
देवि! दुःख कुल सागर माँही। दुःखित हौं अति दुर्गति ताही ॥
लेहु कृपा दृढ़ नौका निज सों। पद कमलालय अद्भुत विधि सों ॥८॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कृष्णसर्प तव अन-अवलोकन। मैं जन कीन्हौं मृत बहु दंशन॥
चरण कमल जो लगी महावर। देवि! जियावहु दै औषधि वर॥९॥

छन्द-चौपइया

तव चरण कमल की दासी। भरि विरह दवागिनि रासी॥
अति झुरसि परी तनु वेली। टुक सुधा दीठि लखु हेली॥
हे देवि जिवावहु ताही। थिर थिती होय व्रज माँही॥१०॥

दो०—किधों स्वप्न में हूँ सुमुखि तव पद-पद्म-पराग।
राग-गन्ध-भूषण अहो धरिहौं मैं शिर-भाग॥
शोभापरमिति खानि जो सिर निज ऊपर राखि।
नाम सार्थक करहि गौ "उत्तमाँग" अस भाषि॥११॥

तव नूपुर की रुन-झुन-लहरी। अमरित-रस-सागर सम गहरी॥
मम वधिरत्व दूरि कब करि है। हा कल्याणि! विकल चित भरि है॥

सोभाछन्द—जब शशधर अभिसारन। नेत्र भृंग की कोरन॥
सभय विलोकति जाहीं। दिशि विदिशन वन माहीं॥
नील कमल के कोषन। छिटकावत चहुँ ओरन॥
कब चितवहु हे देवी। यहि दासि चरण तव सेवी॥१३॥

दो०—रूपवती इक मंजरी करि सनेह मो पाहिं।
नैन सिखावन जब दई या वृन्दाभुवि माहिं॥
हे वृन्दावन-ईश्वरी तव तें मो अभिलाष॥
भरि इच्छा देखत रहौं तव पद पद्म जु लाष॥१४॥

रोला—सरस भृंग उल्लसित मंजु कंजनि की पांती।
सुठि सोभित जा चारु वारि मधि अनुपम भाँती॥
वहै मधुर जल सधर भरयौ तुमरौ सर जोई।
मम नैंननि तट सुमुखि अघट प्रगट्यौ जब सोई॥
हे फूले-दल-कमल-लोचनी तब ही मन में।
भई अमित अभिलाष लाष तुव दासा तन में॥१५॥
तुव पद पंकज विमल दास्य विन हे सुकुमारी।
कबहुँ न जाचों आन जान निहचै वलिहारी॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सख्य भावनहिं चाव ताहि हों नवों नवों नित।
दासा तन रस होहु सेउँ रस सत्य वदत इत ॥१६॥
हे नख विदलित हरदगर्भ दुति कृपा लापसों।
सुठि सुहाग की ललित महावर बलित छाप सों ॥
करि अंकित मम भुजनिकों जु हितसों विन छेवा।
कव दैहो निज चरन कमल की अति प्रिय सेवा ॥१७॥

श्रीधर छन्द—दै जलधारा मधुर अपारा सुघर सुवासित जो।
ह्वै गुनसाली धोय प्रनाली अति हरषित चित सों ॥
चिकुर निकर में निज युग कर में भरि हित अनगण जू।
कवहुँ न लाजों चित दै माजौं है साँचौ पन जू ॥
लै वर धूपै गंध अनूपै अवर वाह्य घर जो।
कव नित प्रति ही वासित अति ही करहुँ प्रेम भर सो ॥१८॥

सोभा छन्द—प्रात समें हे राधे। भामिन गुननि अगाधे ॥
वरकपूर जुत माटी। लाऊँ करि परिपाटी ॥
अवर सुवासित पानी। लाऊँ हे सुख दानी ॥
आन सदन के मांही। तुव पद युग हरषाही ॥
दै जलधारा जानौ। करि प्रच्छालन मानौ ॥
कव निज कर में पाछें। करि हों मार्जन आछें ॥१९॥
चरन कमल जव ध्वैकै। कृत दांतुन हूँ द्वै कै ॥
स्नान हेतु सचु पैहौ। आन सदन में जै हौ ॥
तव अति ही हित छै कैं। तैल सुवासित लैं कैं ॥
तुव अंगनि में पाछें। हरषि लगाऊँ आछें ॥
पुनि उवटनि सुख रासी। कब करि है यह दासी ॥२०॥
हे जित-विधु-मुख-पद्मा। हे स्वामिनि रस-सद्मा ॥
गंध कुसुम जुत जानौ। कलित कपूर हु मानौ ॥
मधुर सुवासित पानी। भरि भरि घट सुखदानी ॥
देति रहै अलि कोऊ। प्रणय ललित अति सोऊ ॥
तुव अभिषेक जु भारी। कब करिहों बलिहारी ॥२१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वलि तुव अंग सु जोहै। मृदुल मनोहर सोहै ॥
पट सुचीन सों आछें। अमित जतन भरि पाछें ॥
वीर नीर तन जोई। हरें हरें जब सोई ॥
दूर करो बलिहारी। तव तुव सोभा भारी ॥
मीन दृगंचल जानौ। भ्रमित दसों दिसि मानौ ॥
लखि लखि अति ललचावों। लाल नील पट लावों ॥
लहंगा लाल सु भारी। कटि तट में सुखकारी ॥
नील निचोलै जानौ। नख सिख लों उनमानों ॥
हरषि पुलकि बलि जाऊं। कब इह विधि पहराऊं ॥२२॥
बलिहारी बलिहारी। हे ब्रजेन्द्र-सुत प्यारी ॥
धोय चरन युग आछें। पुन क्रम ही सों पाछें ॥
ग्रथित नर्मदा जानौ। सुच्छम सुभग बखानौ ॥
अनुपम माला लैकै। सरस प्रणय रस छैकै ॥
तुव कच कुलकों रूरौ। कब रचि हों बलि जूरौ ॥२३॥
मृगमद सों निरधारा। तिलक जु चंद्रा-कारा ॥
भरि भरि मोद जु आछें। रचि ललाट महि पाछें ॥
लै केसर बलिहारी। प्रति अंगनि में भारी ॥
अरचि चरचि कें जानौ। पुन मृगमद सों मानौ ॥
कुच युग चित्रित पाछें। कब करि हों बलि आछें ॥२४॥

उपदोह।—रतन सलाका कलित ललित सिंदूर रेख जो।
मम कल्पित तुव मांग माहिं मंगल विशेष सो ॥
हा हा स्वामिनि सुपुनि अहो दुति दामिन अद्भुत।
कब करि है भरि झलक अलक कुलकों सोभाजुत ॥२५॥
चिलक जुक्त वर तिलक चहूँ दिसि अनुपम भांती।
अरुन रंगवर गंध की जु वेंदिन की पांती ॥
कृष्ण-चित्त वर मत्त-करी औषध सुनि जोई।
कब ह्वैहै मम धीर करनि कल्पित पुनि सोई ॥२६॥
हे स्वामिनि! ब्रजराज-सुवन मद वलित चित्त जो।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजत है अति प्रवल वली करि राज मत्त सो ॥
तिंह बंधन हित श्रवन युगल तुव विमल लसें अस ।
रति पति की परकास जु लखियत सुदृढ़ पांतिजस ॥
वहै श्रवन युग कों जु मोद भरि भरि अति ढरि हों ।
दै अवतंस प्रसंस सु कव भूषण युत करिहों ॥२७॥

चौ०—तुव कुच आछादन हित भारी । मम अरपित जो अंगिया कारी ॥
सोन कंचुकी है उनमानौ । पै स्वामिनि यह सत्य जु मानौ ॥
कृष्ण कमल दल मैन मुरारी । लखि सुचि कुच युगकों बलिहारी ॥
प्राननि हूँ तेंऊं जु अधिकतर । जानि मानि पिय निज निधि युगवर ॥
आपहि ह्वै कंचुकी जु निरमल । निश्चय गोपन करत लपटि गल ॥२८

उपदोहा—तुव उरवर हे कनक गौरि हे परम सुहावन ।
श्रमित अलस जु त नंद सुवन सजा मन भावन ॥
लै नाना मनि रचित चारु मुक्तनि की माला ।
मंजुल विमल रसाल सुखद हद विसद विसाला ॥
उमगि उमगि भरि सरस रंग रस हे रस रासी ।
कव करि है वह स्वच्छ बच्छ सोभित यह दासी ॥२९॥
मंजुल मणिकुल खचित नीलदुति रचित जु चूरी ।
तुव हरि-प्यारे करनि में जु स्वामिन अति सूरी ॥
अरु अंगुरिनि में हरषि अंग मुदरिन की पांती ।
हे इन्दीवर-सदृश लोचनी अनुपम भांती ॥
कवहुँ कि सजिहों समें पाय हरषाय भागबल ।
करिहों भूषण सुमुखि सरस निरदूषण तरभल ॥३०॥

चौ०—तुव पद पंकज कों चित दै कै । करि अर्चन मनि नूपुर लै कै ॥
तिंह अंगुरिन कुल लसहि विमल दल । अरचि अरचि तिनहूँकों पुनभल
वलि कटितर जो वर सुखकारी । प्रेम पीठ कंसारी भारी ॥
ताहि तुरित किंकिन लै पाछें । कव अरचों हित सहित जु आछें ॥३१
तुव भुज युग हें सदृस मृणाली । मंजुल मृदुल अतुल गुन साली ।
मुरजित मति हंसिनी सुजोई । लखि लखि धीरज धरै न कोई ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अस तुव भुजनि में जु जुग अंगद । अनगन मनिगण खचित रचित हद
अमित प्रमद भर नमित होय पुनि । कव अरपन करि हों स्वामिनि सुनि
जो तव कंठ सुनौ वलि जाहीं । स्वामिनि सुखद रास रस मांहीं ॥
कृष्णचंद भुज सरस परस भर । पायो है अति ही सौभगवर ॥
ललित कंठ भूषण लै मांनहुँ । कनक कलित निर्दूषण जानहुँ ॥
वहै कंठ कों उत्कठिंत मन । कव पूजै सुभगा पुन यह जन ॥३३॥
सीमंतक मणि मंगलकारी । निकर दिवाकर सम दुति धारी ॥
है जु कौस्तुभ कौ सुमित्र वर । प्रलम्बारि जाकों भरि हित भर ॥
संख-चूड़ वध तें सचुपाही । दीनी मधुमंगल कर मांही ॥
सुमुखि ताहि तुव हार मांहि सुनि । कव करिहों धनि नायक मनि पुनि
कृशोदरी तुव कटि अति छीना । मत टूटै मैं ह्वै भय भीना ॥
कंचन कलित ललित लै डोरी । युगल वंधायतु हे नव गोरी ॥
सोचति कव तिंह ढिग अनुसरि हों । चकित ससंकित वंधन करि हों
जो नासा तुव गहिवर ओभा । जीती सुसम कुसुम तिल सोभा ॥
सो पुनिकनक गुनित वर मोती । लखियतु जाकी अनुपम जोती ॥
जिमि मकरंद वंद सचु पावत । मधुरिपु मधुप हि छोभ करावत ॥
मम करतें स्वामिनि वलिहारी । कव लै है सुख दैहै भारी ॥३६॥

छप्पै—अनुपम अंगद सहत सहित हे कंचन वरनी ।
दुख हरनी नवरत्न माल अति मंगल करनी ॥
पट गुच्छकी स्वच्छ लसनि जिंह लखियतु अद्भुत ।
भरि भरि अति चित चाय ताहि ह्वै परम प्रणय जुत ॥
तुव निदेस वल पाय कें यहै चहत चित मोर ।
कव पहरांउ सुजांउ वलि वामभुजा महि तोर ॥३७॥

चौ०—तुव श्रवननि ऊपर सुखदाई । मम अरपित जो चाक सलाई ।
हे चल नैनी यदपि मुरारी । हे छोभक अगनित व्रजनारी ॥
सो तिनहूँ कों तदपि वारसत । भ्रमन करावहु चारु चक्रवत ।३८

सो०—चिबुक चारु वलि जांहि, हरि सुख मन्दिर सुन्दरी ।
कव रचिहों तिंह मांहि, मृगमद सों वेंदी सरस ॥३६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रंगो०—अरुनरंग सों रंग भरि वलि कव रंगि हों तुव दसन अस ।
पद्जराग गुन कलित सुठि स्वामिनि मुक्ताफल सुजस ॥४०

छ०—कथ कपूर की कलित ललाई ललित सधर मैं ।
मम कर रंजित सुधा मधुर तुव विंव अधर मै ।
कृष्ण कीर गत धीर ह्वै जु भरि भाय आय पुनि ।
कव डसि है ललचाय औचका हरष काय सुनि ॥४१॥
जिह अँचल चँचल होत छिन अति जकरि वँधें करि-राज हरि ।
तुव जित मृग चख मसि दै सुमुखि कव पूजै यह जनभाय भरि ॥४२

हे भामिनि तुव मान भंग सुभ समय रंग भरि
नेही नव गोविंद नंद-सुत अति उमंग ढरि ।
जिह रेखनि सों रसिक रंगीलौ हे रस गोभा ।
ह्वै रंजित सिर अधिक लहै अति परमा सोभा ।
वहै महावर सरस रस तुव चरननि तल सुनहुँभल ।
मम कर अरपित होय पुनि कव छवि लैहै अति अमल ॥४३

चौ०—कला-कोविदा हेम-मरालिनि । द्युति दामिनि धामिनि गजगामिनि
अति अनुपम तुव हे रसगोभा । नमित खरनि की अमित जु सोभा ॥
कोटि काम कुलहू तें भारी । कला उदधि मुररिपु छवि धारी ॥
तिनके सरस रास सुखदायक । जेहें परम सहायक लायक ॥
वहे खरनि में मल्लीमाला । कूजित पूजित मधुकर जाला ॥
हरषि निरखि अति ह्वैं पुलकित तन । कव अरपै वलि यह दासीजन ।४४
दिनकर मनि चोंतरी मांहिं ढरि । अलिनि संग अति प्रेम रंग भरि ॥
जव तुम सूरहिं अरघ देन हित । ह्वै जु रहोगी अति उत्कण्ठित ॥
अरघ सोंज तव अति सुखरासी । तुरितहि कव दैहै यह दासी ॥४५॥
निज कृत पाक सरस सुखदाई । वहु विधि वर पकवान मिठाई ॥
लहि निदेस जसुमति निरधारा । हरषित तन भरि जतन अपारा ॥
निज अलिगन के हाथनि में सब । मम सटसाहू के कर में कव ॥
तुरतहि अति सचु पैहौ दैहौ । मधु रिपुहित हितसहित पतैहौ ॥४६॥
हे स्वामिनि श्रीरानि निरखि अति । अन्न सहित तव मोहि निरखि अति
निज ललाट कों प्रीति अघट भरि । मम ललाट तट में प्रकटहि धरि ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हित सों जिमि जननी बलिहारी। कुसल बात हरषात तिहारी॥
कब बूझैं मो सों अति धन्या। जानि मानि तुम में जु अनन्या॥४७॥
सोभा छन्द—हे स्वामिनि सुकुमारी। है अभिलाषा भारी॥
भुक्त शेष हरि जोई। दत्त धनिष्ठा सोई॥
भरि भरि मान सुमानौ। हुलसि हुलसि हिय जानौ॥
तुव आगें बलि जाउँ। कवलाऊँ सचु पाउँ॥४८॥
उपदो०—खान पान बहु भाँति भामिनी सरस सुधा सम।
हरिप्रसाद पुनि मिलित ललित रस वलित जु अनुपम॥
ललितादिक निज अलिन संग रस रंग जु भरि हौं।
मम कृत जतन अपार सुमुखि कब भोजन करि हौं॥४९॥
पाटल अवर कपूर पूर वासित अति निर्मल।
अरपि प्रथम रस खानि पान हित सरस मधुर जल॥
कब दैहों पुनि समें समुझि तुव अति सुख दायक।
हित सौं सींकरु नीर वीर तुव अचवन लायक॥५०॥
सोभाछन्द—हे स्वामिनि सुखदानी। अवर सुनौ मम बानी॥
धूप अनूप सुजानौ। गंध अमंद बखानौ॥
अबर विजन हूँ सोई। उँह छिन लायक जोई॥
भरि-भरि जतन अपारा। अति हित चित निरधारा॥
असन समें बलि जाहीं। कब दैहों सचु पाहीं॥५१॥
उपदो०—वर कपूर रस पूर भूरि जुत सरस सुपारी।
वीरी अति रस खानि वीर पाननि की भारी॥
हे स्वामिनि सुख सदन बदन सरसिज मांही तव।
हरषि पुलकि प्रति अंग रंग भरि हौं दैहों कब॥॥५२॥

चौ०—ललिता लै आरती मोद भर। करि है तुव न्यौछावर अतितर॥
मंगल गान कुसुम लै धन्या। करि हैं न्यौछावर अलि अन्या॥
कच अरु अन गन प्राननि रासी। बलि स्वामिनि तासों तुव दासी॥
उपदो०—ललितादिक वर अलिन संग ह्वै अति उमंग वस।
प्रकट करत पुन अघट स्वामिनी सरस हासरस॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मम कर कल्पित सुभग केलि सुटि सेज सु अद्भुत ।
कब करि हौ रस भोय सोय स्वामिनि भूषण जुत ॥५४॥

* चौपाई *

जा दिन तुव पद युग सुख रासी । पुलकि पलोटै वलि यह दासी ॥
रूप मंजरी अबर सुयुग कर । सुभग हृदय-सद्म वलि हित भर ॥
सो दिन पुनि इन दुहुँनि केजु प्रति । कब ह्वै है सोभायमान अति ॥५५॥
उपदोहा—हे स्वामिनि तुव भुगत सेस पुनि चरनोदक भल ।
अरु मुख सरसिज गलित सुधा सम ललित मधुर जल ॥
अमित भक्ति भर नमित हित् जन सहित सहित पुनि ।
कब लँहिहों वलि प्रचुर भाग वल हे स्वामिनि सुनि ॥५६॥

* चौपाई *

असन करत में हे स्वामिनि सुनि । तुमहीं मम सु लगन जानि पुनि ॥
विमल कमल मुख तें जु नेह वस । कब दैहौ अति सरस सुधारस ॥५७॥
अब सुनि सोई कहों सु जोई । कृष्णचंद्र हित करन रसोई ॥
पुलकि अंग रस रंग भरति में । नंद गाँव कों गवन करति में ॥
हिय अनंद भर अति डग मग डग । कब ढरिहौ मम नैननि के मग ॥५८॥
दच्छिन में तुव अति सुख काजै । ललिता ललित गुननि छवि छाजै ॥
वांई ओर विसाखा जानौ । अरु अलिकुल चहुँ ओर वखानौ ॥
पाछें मत टूटै कटि छीनी । हों जु चलों गहि अति भय भीनी ॥
रूप मंजरी परम अनूपा । तुव आगें पुनि हे रस रूपा ॥
सावधान अति ह्वै पग पग में । कब तुव कों लैं चलें जु मग में ॥५९॥
हे स्वामिनि नंदीसुर जोई । तिंह उपमा कों नाहिन कोई ॥
चायनि सों जामें सुख सारा । गायनि के सुनियत हुंकारा ॥
कोलाहल गोपनि जहँ भारी । भाट भवैयनि सों छवि धारी ॥
यद्यपि गोवर्द्धन गिरिराजा । है व्रजजन पूजित सुख साजा ॥
पै नंदीसुर हरि प्रियता वल । राजत ताहू तें गुरु तर भल ॥६०॥
व्रज महेन्द्र वर मन्दिर सोहै । छवि वरनें जग में कवि कोहै ॥
वह मन्दिर मंहि पुलकि अंग में । जब ढरि हौ निज अलिन संग में ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निरखि धनिष्ठा हरषि दूरतें। धाय चाप निज भाग भूरतें॥
मम सोंहीं तुम कों वलि जांहीं। तुरित हि कव लैहै घर मांहीं॥६१॥

सोभा०—हे स्वामिनि रसरूपा। कुशला परम अनूपा।
अमल कमल पद ध्वै कैं। अति हरषित चित ह्वै कैं॥
पाक सदन के मांही। ढरि अति हिय सचु पाहीं॥
जसुमति आदि वखानौ। तिंह चरननि में जानौ॥
प्रनति रासि करि आछें। करत रसोई पाछें॥
मोहि सुकव हरषाहीं। सुख सागर के माहीं॥
वलिहारी वलिहारी। करिहौ मगन सुभारी॥६२॥

चौ०—खान पान रसखांनि सुधासम। क्रमहीं सों हे स्वामिनि अनुपम।
भरि भरि अति मन मान जु भारी। नमित मुखी ह्वै हे सुकुमारी॥
कृष्णचंद आनंद कंद हित। हित सों ह्वै अतितर हरषित चित॥
सुपुनि रोहिनी के कर मांही। देत रहौ जव हों वलि जांही॥
तव तुमकों मैं हे रस सदना। कव लखि हौं ह्वै विकसित वदना॥६३
जो तुव मुख सरसिज सुकुमारी। नव गोविंद नवल छवि धारी॥
असन समें गुरु सभा मांहि सुनि। ह्वै अतितर मद उत्कण्ठित पुनि॥
नीठि नीठि करि नमित डीठ गति। निरखि विसेखें हिय अनंद अति
हे मधुरा तुव वह मुख अद्भुत। कवि करि है वलि मोहि मोद जुत॥६४
नंद नंद गोविंद मुरारी। गोरच्छन में दीक्षित भारी॥
हे स्वामिनि वे अति हरषित मन। भवनहुं तें जब गवन करहि वन॥
व्याकुल मति जननी कृत हितभर। लाल्यमान अतितर नगधर वर॥
तव तुम गोल कपोलनि उज्ज्ल। मंद मधुर मुसकनि प्रगटत भल॥
ह्वै हौ जो तिंह देखन हारी। सो तुव कव लखि हों वलिहारी॥६५
कोटिमातु हू तें सुखदानी। नेहवती अति यसुमति रानी॥
मम सोंही स्वामिनि निरधारा। कौतुक सोंदे सोंरु अपारा॥
जब तुमकों अति हरष अंग में। निज प्रिय गण के संग रंग में॥
वलि जांहीं स्वामिनि वलि जांहीं। भरिहित चित भोजन सुकराहीं॥
तव तुमकों लखि पुलकित तनमें। कव लहि हों हों मोद जु मन में॥६६

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छप्पै—चुम्वन सीस निसंक अवर भरि अंक जु लैवौ।
लाख लाख अभिलाष भरत भरि नेह चितैवौ॥
खंजन नैंनी सरस तुमें जव जसुमति अतितर।
नवल वधू ज्यौं लाड़ लड़ावै अमित मोद भर॥
तव स्वामिनि वलि निरखि भल वदन सदन छवि तोर।
प्रगट करों कव अघट सुख यह चाहत चित मोर॥६७॥

उपदोहा—सधर प्रणय भर हे रस रूपा रूपमंजरी।
तुव भुज अरपित ललित मृदुल जिंह वांह वल्लरी॥
विपुल विलोचन चारु सरस जिंह अंचल चंचल।
अघट प्रगट पुनि काम तरंग सु अंग अंग भल॥
उंह गजगामिन कों जु हरषि कब ढरि तिंह पाछैं।
हरि भूषित सुभ केलि कुञ्ज महि लैहों आछैं॥६८॥

चौ०—अहो प्राण सखि रूप मंजरी। सो ईस्वरि मम परम रस भरी॥
वलि तुव सहित सु प्रेम पुञ्ज में। निज सरवर तट मंजु कुञ्ज में॥
कुसुम कलित भूषण गण लैकै। भूषित करत पियहिं चित दैकै॥
हा हा हरि हरि कब ह्वै हैं पुनि। मम नैननि तट अघट प्रगट सुनि॥
स्वच्छ विच्छन के मुख तें पुनि। मधुरिपु सुभ अभिसार समें सुनि॥
हे सुभगा सूच्छम दुकूल लै। फूलनिहीं के कर्नफूल दै॥
अरु हारादिक हू सु रसाला। सुभग सुखद तर विसद विसाला॥
हरषि तुमें कव हे स्वामिनि मम। करि हों भूषन भूषित अनुपम॥
नव पुहुपनि की वंदन माला। कूजित पूजित मधुकर जाला॥
केसर कलित अवर सुख कारी। मदन चित्र सुख सदन जु भारी॥
सुठि सोभित जिंह द्वारा में सुनि। उह मदनानंदद घर में पुनि॥
कुसुम सुसुम मल्ली कुल लै कै। तुरितहि हे स्वामिनि चित दैकै॥
उमगि उमगि मन मोद जु सचि हों। भरि भरि हेज सेज कब रचि हौं

रूप मंजरी चारु करार्चित हरि पद पल्लव।
हरिभुज अरपित सरस रंग तुव उत्तमंग जब॥
हरें हरें तव हरषि हरषि हे हाटक वरनी।
पुलकि पलोटों चरण कमल तुव कव सुभकरनी॥७२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चौ०—गिरि गोवर्द्धन निकट मुरारी। रसिकन के सिरमौर जु भारी ॥
रूप अवर जोवन गरवीलौ। छली दान-छल छैल छवीलौ ॥
जब तुम कों एकें मग रोकें। तब स्वामिन हों हरषित होकें ॥
कब लखि हों तुम कों रस एंना। सतर भौंह सों गरबितनें ना ॥७३
तुव तन सरस गंध हे वीर। वलित चलै जब ललित समीर ॥
चंद्रावलि कर कृत उनमानि। मल्ली केलि सेज रसदानि ॥
छल सों छाड़ि सुताहि सुजान। करि तुमकों पुनि अति सनमान ॥
आय मिलें जब तुव सरतीर। मत्त भ्रमर सों ह्वै गति धीर ॥
तब लखि लखि हों वह छवि पूर। प्रकट करों कब अघट गरूर ॥७४
जो तुव सर मधुरावलि जाँही। सधर मधुर अनुपय जग माँही।
सुटि सोभित जहं अमल कमल कुल। सीतल मृदुल सुवासित मंजुल
कूजित अरु पच्छी कुल जामें। हित सों अलिनि सहित पुन तामें ॥
प्राणनाथ कें संग प्रेमवस। कब लखि हो तुव सरस केलिरस ॥७५॥

छन्द—राधासर के तीर जामें भ्रमर बसैं।
मंजुल कुंज कुटीर जामें कुसुम लसैं।
हरसि हरी तिंह माँह हे वृषभान सुता ॥
वरनि वरन के फूल सोभा कहि न बनें।
लै कै ह्वै अनुकूल प्रीतम प्रेम सनें।
कब तुम कों सचु पाँहिं हे वृषभान सुता ॥
करिहें सुभग सिंगार नेह जु अघट भरत।
मम सुख समुद अपार ताहि जु प्रगट करत।
वलि जाहीं वलि जाँहि हे वृषभान सुता ॥७६॥

चौ०—नवविकसित अति कुसुममुसमभल। मोर पुच्छअरु मँजुगुँजफल
भरि कौतुक हरि के कर कोऊ। देत रहैं विकसित चित सोऊ ॥
स्वामिनि हू तव अँग-अँग भारी। फूलि रहें जिमि सुठि फुलवारी ॥
सुचि रुचि सों तिंह चिकुर निकर सब। कंपित हरिकृत रचित होय जब
वह मंजुल कचकुल अति अनुपम। कब दैहैं सुख द्रगनि कों जु मम ॥७७
मदनकेलि में ह्वै मतवारी। अमल कमल लैहे सुकुमारी ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब हि विहारी कों वलिहारी। हरिहि करौ परिहार जु भारी॥
सो लखि कब ह्वै है सुखरासी। मंद हास वदना यह दासी ॥७८
उपदोहा—तुव भुज प्रिय के शयन में जु जब छाय रहैं छवि।
प्रिय भुज सों तुव नमित अंस परसंस रहें फवि॥
गावत पुन तिंह संग अनंग जु गीत मधुर गति॥
कब दैहौ वलि जांहि सुभगमुखि मोहि मोद अति॥७९॥

चौ०—खेलत पासे जीत सुमित सौं। मुसि मुरली परिहास रीति सों।
त्रहि जु चलावौ मो मांहूँ जब। ताहि दुराऊँ वलि जाऊँकब
मदन सुखद घर मांहि हेज में। कलित मालती केलि सेज में
गोल अमोल कपोलहि में पुनि। प्रगट करत अति मृदु मुसकनि सुनि
मधुर गोठ प्रिय के जु सँग में। करत रहौ जब सरस रँग में॥
पुलकि तुमें तव हे सुखरासी। कब करिहैं सुविजन यह दासी॥८१
हे नव विकसित सरसिज वदना। सरस रसीली हे रस सदना॥
सुभलीला अभिसार तें जु पुनि। गमन करत हे गजगामिनि सुनि॥
अमित श्रमित ह्वै हे सुकुमारी। ह्वै निलजा सलजा वलिहारी॥
अमल कमल पद संवाहन हित। यह निज दासी कों भरि हित चित
गहि गहि नाम सुभरि भरि चायनि। कब प्रेरन करिहौ सुखदायनि
दिनकर अर्चन समें भयौ तव। गई धेवती राधे कित अब॥
कुपितासी मुखरा भाषति इम। कब दैहै सुख मोहि सुधा जिम॥॥८३

दो०—स्मित कपूर रस पूर जुत सुधा वदन तुव जोय।
श्रवण नैंन में चैंन हित कब सेवों वलि सोय॥८४॥

चौ०—हे रसरूपा रस उमंग में। रस कुटिला निज अलिनि संग में॥
फूलि फूलि प्रति गनि मांही। वीनत फूल कबहुँ सचु पाही॥
पिय के सँग जिय के सुखकारी। कपट झगर झगरत सुकुमारी॥
कबहुँ रिसभरी ह्वै रसवदना। मम मोदहि हे सरसिज वदना॥
वडी वेरलों कब अति भारी। सुभग व्रता करि हौ वलिहारी॥८५
दुःसह काकु वचन अनगन में। सरस प्रियतया मन मोहन में॥
प्रार्थ्यमान ह्वै कें अतिभारी। मानभंग हित तुव वलिहारी॥८६

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ह्वै आतुर यह जन सुखरासी। प्रीति रीति सों पूरन मासी॥
नृत्यरु गीत पुनीत जु भारी। अहो मंगला मंगलकारी॥
वीनादिक जंत्रनि कृत जानौ। महा महोच्छौ सौ उनमानौ॥
अवर अघट घट हे सुखदानी। भरि भरि सुच्छ सुवासित पानी॥
पूरनमासी पगि हित पैमें। वृन्दावन अधिपत्य विषै में॥
तुव अभिषेक करें धीरा जब। सो तेखों लेखों जु भाग कब ॥८७॥
श्रीदामा भइया भरि चायनि। ह्वै सु नेह जुत अजुत जु गायनि॥
दै कृपना जटिल हि सुखकारी। करि संतोष ताहि अति भारी॥
राखी पून्यौ में भरि चायनि। निज मंदिर में हे सुखदायनि॥
जब लैहै तुम कों सचु पाहीं। तुम हूँ तव स्वामिनि बलि जाहीं॥
हरष सोग कृत दृग जलधारा। तामें भीजि रहौ निरधारा॥
लै तुम कों तव हे सुखदानी। श्री वृषभानुरु कीरति रानी॥
भरि वत्सल रस कब अति अनुपम। लाड़ लड़ावें देखतिमें मम ॥८८॥

सोभा छन्द—अनगन अलिगन सोंही। ह्वै अति ही जु लजोंहीं॥
लै मोकों सचु पांही। गिरि गहवर के मांही॥
कब सिखवौ तजि खेदै। गानरु तिंह सुर भेदै ॥८९॥
ललितासों सुकमारी। ह्वै सु जाचिता भारी॥
अनगन निज गन मांही। लाजनि सों बलि जांही॥
नमित मुखी अति ह्वै कैं। जलज-मुखी चित दै कैं॥
सरस काव्य कुल जोई। मोहि मया भरि सोई॥
कब स्वामिनि बलिहारी। पाठ करै हौ भारी ॥९०॥

सोरठा—निज सर तीर कुटीर पूजित भ्रमरनि भीर जहं।
कब सिखवौ वलि वीर मोहि मया भरि कच्छपी ॥९१॥

चौ०—प्यारे के संग करत विहार। टूटै प्यारी प्यारौ हार॥
लै ताकों गुहिवे के काज। निज अलिगन सों भरि अति लाज॥
मोहि मया भरि परम सुदेस। संज्ञा ही में सरस निदेस॥
कब दैहौ अति ही सचु पांहि। वलि जांहीं स्वामिनि वलि जांहि ॥९२
खान पान चहुँ ओर निरखि कै। समें समझि भरि नेह हरषि कै॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कव उगार स्वामिनि अति मुख में। निज मुख तें दैहौ मम मुख में ॥९३
प्यारे के संग वारी वारी। मदन युद्ध में ह्वै मतवारी ॥
भूलि रहौ जो किंकिनि जाला। दयित मधुर तर परम रसाला ॥
आन समें सुधि ठान जु आछें। सैननि में तिंह हेत जु पाछें ॥
कव मोकों तुरित हि सचु पांहीं। लै प्रेरन करि हौ वलि जांही ॥९४
निपट तनक हूँ तें जु तनक पुनि। कोऊ एक चूक की जु भनक सुनि ॥
हे धीरा स्वामिनि वलिहारी। दैहौ दंड प्रचंड जु भारी ॥
सो सुनि ललिता अति रिस भरि है। लै मो कों तुव डिग अनुसरि है ॥
हे स्वामिनि तुम यह जनकों तव। सदय हृदय लखि हौ जु नेंकु कव ॥
उपदोहा—हे स्वामिनि हौं हों जु तिहारी हों जु तिहारी।
तुव विन निहचै मीच हमारी हे सुकमारी ॥
कंचन वरनी यहै जानि चित हे दुख हरनी।
लेउँ चरन ढिंग मोहि मया भरि मंगल करनी ॥९६॥
दो०—निज सर चलि-चख पिय सहित तुव आस्य दहद सोय।
यहै ठौर मम वास अरु इह थल ही स्थिति जोय ॥९७
चौ०—अहो सरोवर मम ईसा जो। नित प्रति तुम हीं में भरि हित सो
रसिक मीत रस सदन संग में। विलसत हुलसत मदनरंग में ॥
जौ तुम तिनके हे वर सुखकर। हौ अति प्रिय हूतें पुन प्रियतर
तौ मम साजी वातें हितकरि। दिखवौ अद्भुजु सद्य मया भरि ॥९८
अहो विसाखा मम स्वामिनि पुनि। छिन न तजै तुव संग रंग सुनि।
सम वय धर्म मर्मतें जु हद्द। हौ तुम तिंह परिहास आस पद।
यहै हेत सुमुखी हित छैकै। मम ईसा कों नेंकु दिखैकै ॥
विरह हता मैं हों हत भागनि। राख हु प्राननि मोर सुहावनि ॥९९
अहो नाथ हे गोकुल चंदा। हे प्रसन्न मुख कमल अमंदा ॥९१
हे अति सधर मधुर मुसकनि जुत। हे करुणा रस भीज्यौ अद्भुत ॥
जहं तुव सहित सहित वलिहारी। विरहति मम स्वामिनि सुकुमारी
तहं मोहूकों तुरित हि हरषित। हित सों लेवहु हित सेवाहित ॥१००
तुव पद नखर सिखर रस गोभा। लखियतु तामें अनुपम सोभा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिहकन हित लछमी व्रतधारै । लहि न सकै पुनि रचि पचि हारै ॥
हे स्वामिनि भामिनि नव गोरी । जौ न प्रकास हु मम चख जोरी ॥
तौ वकहा तिन प्राणनि सों मम । जे दुख दाई दाव अनल सम ॥१०१
सुधा समुद सम आसा भारी । ताहीं सौं स्वामिनि वलिहारी ॥
नीठ नीठ दिन अगनित बीते । भए न आज हु लों चित चीते ॥
अब स्वामिनि निहचै जु पतीजै । जौ न कृपा करिहौ सुनि लीजै ॥
तौ वकहा जीवातु मंद में । कहा व्रजरु व्रजराजनंद में ॥१०२
कृपामयी हे मंगल करनी । मो दुखिया प्रति हे दुख हरनी ॥
जौ न कृपा करिहौ अति अनुपम । तौ वकहा अति प्रलपन में मम ॥
पैं तुव कुंड घने दिन निर्मल । भये जु मोकृत सेव्यमान भल ॥
येउ कहा हित सों नहिं ढरिहैं । करुणामयि करुना नहिं करिहैं ॥१०३
अहो प्रणय शीला सुकुमारी । हित सेवा प्रापत हित भारी ॥
अघट विघट दुख दाव अनल भर । दह्यमान जियरा हों अतितर ॥
अतितर अमित रुदन सों भारी । करुणामयि स्वामिन वलिहारी ॥
श्री विलाप कुसुमांजली जु अव । हृदै धारि पद पंकज में तव ॥
मैं अर्पन कीनी स्वामिन जौ । तुव प्रसन्नता नेंकु करहु जो ॥१०४

दो०—भ्रमरकुंज रसपुंज मधि भानुसुता के कूल ।
नव राधा गोविंद जहँ जुग जुग जीवन मूल ॥९६॥
सीतापति पद कमल महि मन मधुपहि सरसाय ॥
श्री रघुनाथहि नाथ सिर दास गुसांई भाय ॥९७॥
श्री विलाप कुसुमांजली सुर-वानी परकास ।
नर वानी में ताहि पुनि सचि वृंदावनदास ॥९९॥
मति अनुरूप विचारि कै रच्यौ सुग्रंथ अनूप ।
चूक्यौ होय सुधारियै कवि कोविद रस भूप ॥१००॥
संवत सत दस आठ अरु वरष चतुर्दश जानि ।
पूस सरस सित पंचमी पूरन ग्रंथ वखानि ॥१०१

॥ इति श्री विलापकुसुमांजली भाषा समाप्ता ॥

मुद्रक—बा० राजनरायण अग्रवाल, बी० ए०, मॉडर्न प्रेस, आगरा ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस पुस्तक के मिलने का पता—

१—श्री राम निवास खेतान की दूकान सबामनशालग्रामजी मन्दिर के नीचे (लोई बाजार) वृन्दावन।

२—बाबा महन्त उद्धारणदासजी, कुसुमसरोवर, गवालियर—मन्दिर, पो० राधा कुण्ड, (मथुरा)।

३—हीरालालजो की दूकान, चौक बाजार, मथुरा (पिआऊ के सामने)।

प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

(ब्रजभाषा में) १—माधुरी बाणी, २—वल्लभरसिकजी की बाणी, ३—गीतगोविन्द, ४—गीतगोविन्द पद, ५—हरिलीला, ६—श्री चैतन्यचरितामृत, ७—गदाधर भट्ट जी की बाणी, ८—सूरदास मदनमोहनजी की बाणी, ९—वैष्णव वन्दना व भक्तनामावली, १०—प्रियादासजी की ग्रंथावली, ११—प्रेमभक्ति चन्द्रिका, १२—विलापकुसुमाञ्जलो, १३—गौरांगभूषणमंजावली।

(संस्कृत भाषा में) १—अर्च्चाविधि, २—प्रेमसम्पूट, ३—भक्तिरसतरंगिणी, ४—गोवर्द्धनशतक।

※ समर्पण पत्रम् ※

श्री श्री राधारमण चरणदास देवस्यानुचर प्रवरस्य
सकल देश प्रसिद्ध कीर्त्तिराशेः, प्रेम मात्र सर्व्वस्व
कृतस्य, निरन्तर सात्विक भावा वल्या
विभूषितस्य, दी न ता सा ग र स्य,
मधुर स्वरालापैः सर्व्वदा गौर
कीर्त्तनकर्त्तुः श्रीरामदासेति
नाम्ना प्रसिद्धस्य, मदीय
आराध्यदेवस्य, श्रीगुरु
देवस्य, बाबाजीमहा
राजस्यप्रीत्यर्थे
समर्पितेयं बाणी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi